www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रज्ञा अभियान का अदृश्य सूत्र संचालन

— श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रज्ञा अभियान का अदृश्य सूत्र संचालन

प्रज्ञा अभियान की निर्धारणाओं और सफलताओं का लेखा जोखा लेने वालों को कार्य-कारण की संगति बिठाने में सफलता नहीं मिल सकती। मानवी प्रयत्नों की एक सीमा है। उसे पार करते हुए अप्रत्याशित परिस्थिति उत्पन्न कर सकना नियन्ता की विधि व्यवस्था के सहारे ही संभव हो सकता है। वर्षा काल जैसी सजलता हरीतिमा, सर्दी जैसी ठिठुरन, वसन्त जैसी मुसकान, गर्मी जैसी तपन कोई मनुष्य उत्पन्न नहीं कर सकता, भले ही वह कितना ही समर्थ क्यों न हो। आँधी जितना व्यापक बुहारी लगाती है उतना कर सकना किसी के बस की बात नहीं। हवा पीछे की चलती है तो वाहनों से लेकर यात्रियों तक की गति बढ़ा देती या सरलता अनुभव होती है। ऐसी अनुकूलताएँ पूर्णतया सृष्टा की इच्छा व्यवस्था पर निर्भर रहती हैं। तूफान के साथ उड़ने को सहमत होने वाले तिनके पत्ते तथा धूलि कण आकाश चूमते और अपंग होते हुए भी द्रुतगामी दौड़ लगाते हैं इसे कौन नहीं जानता।

इतिहास में ऐसे घटनाक्रमों का उल्लेख है जिनकी संगति कायिक और बौद्धिक क्षमता के साथ नहीं बैठती। हनुमान का पर्वत उखाड़ना, समुद्र लाँघना और लंका उजाड़ना उनकी निजी सामर्थ्य से सम्भव हो सकता था यह किस प्रकार माना जाय? यदि वे इतने ही समर्थ थे तो अपने स्वामी सुग्रीव को बालि के त्रास से क्यों न छुड़ा सके? अर्जुन यदि सचमुच ही महाबली थे तो द्रोपदी का भरी सभा में अपमान क्यों होने देते? अज्ञातवास के दिनों जिस-तिस की नौकरी करके छिपते-छिपाते दिन क्यों गुजारते रहे? इन शंकाओं का कोई बुद्धि संगत समाधान मिलता नहीं।

टिटहरी द्वारा समुद्र पाटने का प्रयत्न अगस्त ऋषि की सहायता से सम्भव होना व्यवहार बुद्धि की पहुँच से बाहर है। एक परशुराम धरती पर फैले हुए अवांछनीय तत्वों का इक्कीस बार सफाया करें, और कोई उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मार्ग में आड़े न आये इसका क्या तुक ? ग्वाल वालों की सहायता से गोवर्धन उठाना और रीछ वानरों के कौशल से समुद्र का पुल बाँधना भी कुछ ऐसा ही बेतुका है।

यदि पौराणिक गाथाओं की उपेक्षा की जाय तो भी ऐतिहासिक घटनाक्रम ठीक इसी स्तर के आश्चर्य की अगणित साक्षियाँ प्रस्तुत कर सकने में समर्थ है। बुद्ध की निजी क्षमता और उनके धर्मचक्र प्रवर्तन की व्यापक सफलता का तारतम्य मिलाया जाय तो वणिक बुद्धि का कोई गणित फार्मूला काम देता नहीं दीखता। गाँधीजी का सफल स्वतन्त्रता संग्राम किस प्रकार घोर निराशा और प्रतिकूलता को परास्त कर सका, इसकी कार्य कारण संगति किसी कम्प्यूटर के सहारे बैठती नहीं है। समर्थ रामदास, गुरु गोविन्द सिंह, विवेकानन्द, दयानन्द, बिनोवा आदि की सफलताओं को उनका निजी पुरुषार्थ भर माना जाय तो विवेचना न्यायसंगत नहीं होगी। उनके पीछे अदृश्यकी अनुकूलता का समर्थ अनुदान भी काम करता पाया जाएगा, अन्यथा इनसे भी बड़ी योजनाएँ समर्थ साधनों के सहारे बनाने वालों में से असंख्यों को असफलतायें देखकर यही सोचना पड़ता है कि उनका निजी पराक्रम उस लकड़ी की नाव जैसा सिद्ध हुआ जो तूफान में फँसकर—चट्टान से टकरा कर अपना अस्तित्व गँवा बैठी और मल्लाह के डाँड सतह पर तैरते भर रह गये।

प्रज्ञा अभियान के आरम्भ से लेकर अब तक के इतिहास से जिनका निकटवर्ती सम्बन्ध रहा है, उनकी सामान्य बुद्धि आश्चर्य चकित हुए बिना नहीं रह सकती। आज उसकी स्थिति और प्रगति इस स्तर की है कि संसार के महान परिवर्तन प्रस्तुत करने वाले अविस्मरणीय आन्दोलनों में उसकी गणना हो सके। स्थानीय और थोड़ी सी समस्याओं को लेकर ही अब तक राजनैतिक, सामाजिक आन्दोलन होते और सृजन संघर्ष के उपक्रम भी चलते रहे हैं, पर ऐसा किसी भी मंच से कदम उठाना तो दूर, सोचा तक नहीं गया कि ५०० करोड़ मनुष्यों के चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने के लिए कारगर प्रयास कब और किस प्रकार किया जाय ? प्रज्ञा अभियान ही है जिसने इस सन्दर्भ में गम्भीरता पूर्वक सोचा, कदम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उठाया और वह कर दिखाया जिस पर सहज बुद्धि को सहज विश्वास ही नहीं हो सकता।

प्रज्ञा अभियान की युग निर्माण योजना सामान्य योग्यता के व्यक्ति द्वारा साधनों का सर्वथा अभाव रहने और मानवी सहयोग की दृष्टि से मात्र उपहास ही हाथ लगने जैसी परिस्थितियों में ही चलाई गई है। उसे अवरोधों, प्रतिकूलताओं ने पग-पग पर चुनौती दी है। इतने पर भी यह प्रयास गगनचुम्बी स्तर तक पहुंचा। इसका रहस्य ढूंढ़ना हो तो एक ही निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए कि अदृश्य सत्ताकी इच्छा प्रेरणा और व्यवस्था ही इस रूप में प्रकट हो रही है जिसे युग परिवर्तन का दृश्यमान सरंजाम कहा जा सके।

एक व्यक्ति सोचता है कि धर्मतन्त्र की शक्ति राजतन्त्र से अधिक है। भौतिक क्षेत्र की व्यवस्था और प्रगति का उत्तरदायित्व राजतन्त्र के कन्धों पर आता है, जबकि चिन्तन, चरित्र, व्यवहार और प्रचलन को सही रखने की जिम्मेदारी उठा सकने में मात्र धर्मतन्त्र ही समर्थ है। मनःस्थिति ही परिस्थितियों की निर्मात्री है। मनःस्थिति को पवित्र और प्रखर बनाये रहने में धर्मतन्त्र की भूमिका ही कारगर हो सकती है। इसलिए दुर्दशाग्रस्त धर्मतन्त्र को पुनर्जीवित किया जाय। इसके लिए देश भर के प्रगतिशील धर्मप्रेमियों को संगठित किया जाय और उनकी संयुक्त शक्ति को लोकमानस के परिष्कार एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन में यथा तथ्य रूप में लगाया जाय। यह चिन्तन तो एकाकी भी हो सकता था। पर इसका कार्यान्वित होना ऐसा ही असंभव समझा गया जैसा विश्वामित्र की युग परिवर्तन चेष्टा और परशुराम की विचार परिवर्तन प्रक्रिया को तत्कालीन लोगों ने उपहासास्पद बताया था। उन दिनों योजनायें रंग लाईं। धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण का विचार भी कार्यरूप में परिणत हुआ और आज संसार चकित है कि किस प्रकार यह सृजन सरंजाम साधन रहित परिस्थितियों में भी जुटाकर सफलता की ओर तूफानी गति से आगे बढ़ा।

सन् ५८ का सहस्रकुण्डी गायत्री महायज्ञ जिनने मथुरा में देखा है, वे उसे दैवी चमत्कार कहते हैं। नगण्य से निमन्त्रण पर देशभर के प्रगतिशील धर्मप्रेमियों का चार लाख की संख्या में एकत्रित होना, सभी का धर्म चेतना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के जीर्णोद्धार के निमित्त कटिबद्ध होना। हाथों-हाथ युग निर्माण योजना का स्वरूप बनना और देखते-देखते उसका कार्यान्वित होकर देश के कोने-कोने में युगान्तरीय चेतना का आलोक वितरित करना, सचमुच ही ऐसा चमत्कार है जिसे जादुई कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। मत्स्यावतार की कथा में एक नन्हीं सी मछली ने देखते-देखते समुद्र को ढक लेने जितना आकार बढ़ाया था। ऐसा किसी मानवी प्रयत्न से नहीं हो सकता। परिस्थितियों के साथ प्रगति का गणित हतप्रभ होकर किसी कोने में जा बैठता है।

इन दिनों प्रज्ञा परिवार के प्रायः चौबीस लाख परिजन हैं। सभी एक तरह सोचते और एक दिशा में छोटे बड़े कदम उठाते हैं। नैतिक, बौद्धिक ओर सामाजिक क्रान्ति का आवेश सभी पर छाया है। व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण की उमंगें पग-पग पर कार्यान्वित होती हुई देखी जा सकती हैं। एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य के अंशदान के बूँद-बूँद से गागर भरती है और श्रम-शक्ति, भाव-शक्ति एवं साधन-शक्ति के अभाव में कोई काम रुकता नहीं। इतना बड़ा आन्दोलन जिसमें पूरे समय के प्रायः एक लाख व्यक्तियों जितना श्रम समय नियमित रूप से लगता हो, अनुपम है। इसे बुद्ध और गाँधी के महान आन्दोलनों के साथ जोड़ा जा सकता है। वे बड़े थे उनके बड़े सहयोगी थे। पर यहाँ तो रीछ-वानर ही समुद्र का पुल बांधने और ग्वाल-बाल ही गोवर्धन उठाते दीखते हैं।

धर्मतन्त्र पर लगे प्रतिगामिता के लांछन को हटाने और उसकी प्रचंड प्रगतिशीलता सिद्ध करने के लिए आवश्यक समझा गया कि आर्ष-ग्रन्थों को जन-जन तक पहुँचाया और धर्मधारणा का स्वरूप अवगत कराया जाय। देखते-देखते चारों वेद, १०८ उपनिषद्, छहों दर्शन, २० गीताएँ, २४ स्मृतियाँ, आरण्यक, ब्राह्मण एवं १८ पुराण अनुवादित प्रकाशित और प्रचारित होने लगे। जो कार्य अनेकों ऋषियों ने सहस्रों वर्षों में सम्पन्न किया था लगभग उतना ही श्रम एक व्यक्ति के प्रयास से इतनी स्वल्प अवधि और बिना पूंजी की व्यवस्थाके किस प्रकार सम्पन्न हो गया। मानवी क्षमताकी सीमाको समझने वालों के लिए यह रहस्य अभी भी अनबूझ पहेली बना हुआ है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पुराण लिखने में व्यासजी बोलते और गणेशजी लिखते थे। दो के प्रयास से वह कार्य सम्पन्न हुआ था। यहाँ तो एक ही व्यक्ति सब कुछ करता दीखता है। विचार क्रान्ति प्रयोजन के लिए विभिन्न भाषाओं वाली सात पत्रिकाएँ ३ लाख के लगभग छपती हैं। और मात्र पाठकों के निश्चित अनुबन्ध के अन्तर्गत १५ लाख द्वारा पढ़ी जाती हैं। इतनी बड़ी संख्या में अपने देश की पत्रिकाओं में कदाचित ही किसी के पाठक हों। करोड़ोंकी पूँजी वाले पत्र व्यवसायियों को पीछे छोड़कर आठ सौ रुपये की लागत से आरम्भ हुआ हैण्ड प्रेस इतनी बड़ी भूमिका किस प्रकार निभा सका इसकी कार्यकारक संगति कैसे बैठे।

शान्तिकुंज हरिद्वार और गायत्री तपोभूमि मथुरा की इमारतें जिनने देखी हैं, जो देश के कोने कोने में विनिर्मित २४०० गायत्री शक्तिपीठें देखकर आये हैं वे जानते हैं कि इनके निर्माण में १०० करोड़ से कम खर्च नहीं हुआ है। तीर्थ और देवालय तो पुरातन काल में भी बने थे और वे सभी राजाओं और सेठों ने बनाये हैं। जन स्तर पर इतने बड़े निर्माण चन्द दिनों में संकेत मात्र से बनकर खड़े हो गये हों, ऐसा उदाहरण अनादि काल से लेकर आद्यावधि कोई कहीं भी नहीं मिलेगा। अपने क्षेत्रों में वे सभी प्रज्ञा संस्थान जेनरेटरों की, ट्यूब वैलों की, नर्सरियों की, प्रकाश स्तम्भों की भूमिका निभा रहे हैं। सभी के साथ समयदानी, कार्यकर्त्ताओं की उत्साहवर्धक संख्या कार्यरत है। सभी का निर्वाह चल रहा है। सभी अपनी-अपनी सीमा परिधि में नवयुग के अनुरूप वातावरण बनाने में आशातीत ढंग से सफल हो रहे हैं।

ब्रह्मवचस शोध संस्थान द्वारा नवयुग की महती माँग पूरा करने के लिए अभूतपूर्व कदम उठाया गया है। श्रद्धा पर आधारित पुरातन अध्यात्म तत्वदर्शन की नई पीढ़ी की मनःस्थितिको देखते हुए तर्कज्ञान, तर्क और तथ्यों द्वारा प्रकाशित करने का प्रयास अभूतपूर्व है। अदृश्य जगत, परोक्ष विद्या, अतीन्द्रिय क्षमता का प्रत्यक्ष प्रतिपादन बन पड़ने से नास्तिकता को आस्तिकता में बदलने वाले जनमानस को नई दिशा देने वाले दूरगामी परिणाम होंगे। इस कल्पना, निर्धारणा और व्यवस्था के सम्बन्ध में विज्ञजन कहते है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कि प्रचलित भौतिकवाद पर आध्यात्मवाद को प्रतिष्ठित करने वाला यह युगान्तरीय प्रयास है। भले ही वह महान आविष्कारों की तरह इन दिनों किसी छोटे कलेवर में ही विकसित क्यों न हो रहा हो।

सामूहिक साधनाओं के माध्यम से विषाक्त वायुमण्डल—वातावरण को बदलने के लिए प्रज्ञा पुरश्चरण की प्रक्रिया इन दिनों चल रही है। उसमें २४ लाख व्यक्ति भागीदार हैं और प्रतिदिन २४ करोड़ गायत्री जप सम्पन्न करते हैं। हरितमा संवर्धन का जन आन्दोलन भी साथ-साथ चल रहा है। सामूहिक धर्मानुष्ठानोंके इतिहासमें इसे अभूतपूर्व ही कहा जा सकता है।

एक लाख युगशिल्पी अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में शिक्षा विस्तार, प्रौढ़ पाठशाला, चल पुस्तकालय, महिला जागरण, स्वास्थ्य संवर्धन, व्यायामशाला, स्वच्छता अभियान, सामूहिक श्रमदान, हरितमा संवर्धन जैसे रचनात्मक कार्यों में प्राणपण से संलग्न हैं। नशा निवारण, दहेज उन्मूलन, पर्दा प्रथा, जाति-पाँत, ऊंच-नीच, भिक्षा-व्यवसाय, अपव्यय विरोध, परिवार नियोजन जैसी महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों को व्यापक बनाने में जन-जन का भावभरा सहयोग अर्जित करने में सफल हो रहे हैं। प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने में जितनी प्रगति हो रही है उसे देखते हुए मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का संकल्प अब दिवा-स्वप्न नहीं रह गया। उसकी पूर्ति पर सहज विश्वास व्यक्त किया जाने लगा है।

उपरोक्त तथ्य वे हैं जो सर्वसाधारण को भली भाँति विदित हैं। विगत सत्प्रयासों का प्रतिफल थाली में परोसा और चखा जा रहा है। हाँडी में जो पक रहा है और अगले ही दिनों दृश्यमान होकर पिछली उपलब्धियों से अनेक गुने बढ़े-चढ़े चमत्कार प्रस्तुत करने जा रहा है उनका अनुमान वे लोग लगाते हैं जो सूत्र संचालकों के निकट सम्पर्क में हैं।

चर्म चक्षुओं से अदृश्य जगत का तूफानी प्रवाह दृष्टिगोचर नहीं होता। वे इसका निमित्त कारण किन्हीं शरीरधारी व्यक्तियों को देखते हैं। गुरुजी माताजी की ओर इशारा करते और उनकी तप-साधना को श्रेय देते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं । अनेकों को जो व्यक्तिगत लाभ मिले हैं और वातावरण बदलने वाले जो प्रयास चले हैं, उनके पीछे इसी युग्म की भावभरी चर्चा करते हैं। पर वस्तुतः बात वैसी है नहीं । यह सदा समझा जाता रहा है कि कठपुतली के खेल में लकड़ी के खिलौने उचकते-मटकते भर हैं, उनके पीछे किसी बाजीगर की सधी हुई अदृश्य उँगलियाँ काम कर रही हैं । नियन्ता की युग परिवर्तन आकांक्षा ही योजना का एकमात्र कारण है । श्रेय किसे कितना मिला यह उसकी और अग्रगमन की साहसिकता पर निर्भर है । गुरुदेव अपने स्थान बदलते रहते हैं ताकि लोगों को अनुभव हो सके कि उनके बिना भी कहीं कुछ रुकता नहीं, वरन् अपने क्रम से बढ़ता ही चला जाता है । जो सोचते हैं कि गुरुजी के रहने पर प्रज्ञा अभियान लड़खड़ाने लगेगा उन्हें अपनी आशंका का इस आधार पर समाधान करना चाहिए कि यह किसी व्यक्ति विशेष के पराक्रम, निर्धारण, कौशल का परिणाम नहीं है । जो हुआ है वह नियन्ता के निर्धारण के अनुसार हुआ है अगले दिनों उससे भी अनेक गुने समर्थ एवं व्यापक कदम उठेंगे । ५०० करोड़ मनुष्यों का भाग्य भविष्य बदलने के लिए उससे कहीं अधिक होना है जो किया जा चुका या किया जा रहा है । इसका सरंजाम कौन जुटायेगा ? इसका समाधान एक ही आधार पर होता है कि तूफान अपना रास्ता आप बनाता है । उसका साथ तिनके-पत्ते तक देते हैं । मार्ग में अड़ने वाले विशालकाय वृक्ष उखड़ते और रेतीले टीले हवा में उड़ते और सत्ता समाप्त करते हैं । शीत, ग्रीष्म और वर्षा का बदलता मौसम जब परिस्थितियों में आश्चर्यजनक परिवर्तन करता है तो कोई कारण नहीं कि अदृश्य जगत में चल रहा नियन्ता का प्रेरणा प्रवाह उसके लिये उपयुक्त आधार खड़ा न कर सके । प्रज्ञा अभियान की अद्यावधि सफलताओं को इसी दृष्टि से देखा और भावी सम्भावनाओं का अनुमान इसी आधार पर लगाया जाना चाहिये ।

★★

क्र०/१०३ प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा । मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org